

Videha e-Learning

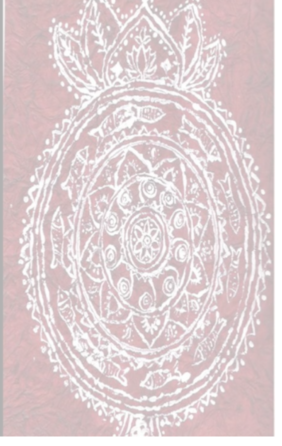


Gajendra Thakur



Videha e-Learning

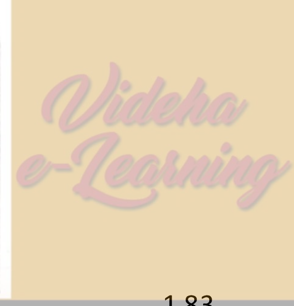
Gajendra Thakur

वामे	-	प्रतिकूल
निअ	-	निज, अपन
मलयज	-	चानन
सयानि	-	विरह विदग्धा नायिका
धनि	-	धन्या-नायिका
हेरसि	-	नेहारैत
हरषि	-	हर्षित भए
परिहरि	-	मेटाय
नखत	-	तरेगण
मधुरि-दल	-	उभय-ओष्ठ
मनसिज	-	कामदेव
अवनत	-	नीचाँ झुकनाइ
हुतासन	-	ज्वाला

४. बद्रीनाथ झा शब्दावली

मिलिन	-	मधुमक्खी, भौरा
रसाल	-	आमक गाछ, कुसियार
अतन्द्र	-	सावधान, जागरूक
खद्योत	-	भगजोगनी
दुर्वार	-	कठिन
यति	-	प्रतिबंध, जतेक बेर
अचलसेतु	-	अदृष्टलेख
विपिन	-	जंगल
तरणि	-	नाओ
अवाम	-	दहिन
गरुड़केतु	-	विष्णु
बौड़ि	-	उन्मत्त
तुषार	-	शीतल
ब्रह्मर्षिसुत	-	कश्यप
वारुणी	-	पश्चिम दिशा
कश्यप	-	मुनि ओ मद्यप
प्रतीची	-	पश्चिम दिशा
कुलाय	-	खोंता
साँझ	-	समाधि वा समुच्चय
जीव-अभिदान	-	नाम
कमान	-	धनुष

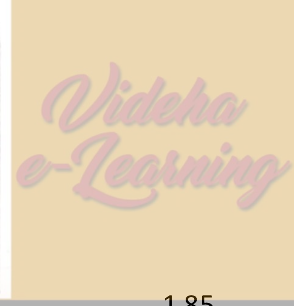


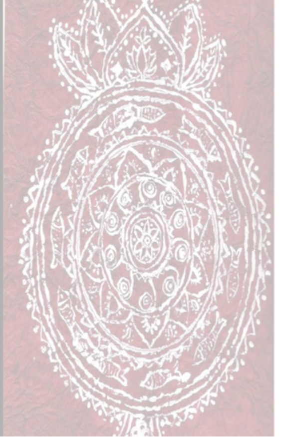
Gajendra Thakur

विधु	-	चन्द्रमा
हय	-	कनेक
नमि	-	नमस्कार
नीराजन	-	प्रातःकालक आरती
मानर	-	मृदङ
काहल	-	वाद्यविशेष
चतुविध	-	आङ्गिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य
उडुगण	-	तरेगण
दैवज्ञ	-	ज्योतिषी
पाटल	-	लाल
पाटल	-	व्याप्त भेल
अविद्या	-	अज्ञान
अधित्यका	-	पर्वतक ऊपरक देश
कुशण्डिका	-	वेदिसम्मार्जनादि
मेधा	-	धारणावती बुद्धि
सम्भार	-	सामग्री
कज्जल	-	कारी (काजर)
भूयसी	-	एक प्रकारक दक्षिणा
दीठि	-	दृष्टि
नृपदार	-	रानी
परिचार	-	परिचर्या
फुलहरा	-	कोढ़िलाक झाड़
राजीव	-	कमल
मुदवारि	-	आनन्दक नोर
तृष	-	तृष्णा
पाञ्चजन्य	-	शङ्ख
जगत्ताताक	-	विष्णु
प्रत्यभिवादन	-	प्रतिप्रणाम
जूटिका	-	शिखा
गोए	-	नुकाए
गुरु-सन्तोख	-	दक्षिणाद्रव्य
अवसित	-	पूर्ण
श्रुतिवेध	-	कर्णवेध
प्रभाक	-	प्रतिभा
गुरु-शुद्धि	-	बृहस्पतिक शुद्धि
औड़ि	-	आग्रहविशेष



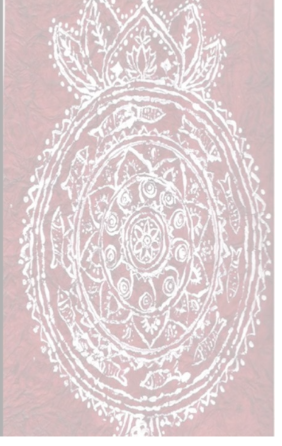

शिविका	-	पालकी
पूर्वाङ्ग-कृत्य	-	मातृकापूजादि
अदम्भ	-	निश्छल
वैजयन्त	-	इन्द्रक कोठा
कौशेय वसन	-	पाटक वस्त्र
भक्ष्य चतुर्विध	-	भक्ष्य-भात आदि भोज्य लाबा आदि, लेह्य चटनी आदि, चोस्य आमा आदि
नीवार	-	ओइरी
अनुताप	-	पश्चाताप
बद्धकर	-	कृपण
विमति	-	विरक्ति
वैमत्य	-	मतभेद
प्रसाद	-	प्रसन्नता
अनुरोध	-	रोच
आर्य	-	श्रेष्ठ
जाचल	-	परीक्षित
सुभगप्रक्रिय	-	सुयश, सुव्यवहार
अचलेश	-	भूपति
बिहान	-	प्रभात
पट्टपटसार	-	उत्तम पाटक वस्त्र
विभूतिवत	-	ऐश्वर्य
एकतान	-	एकाग्र
वनी	-	वानप्रस्थ
और्ध्वदैहिक	-	परलोकोपकारक श्राद्ध
भोज-ओज	-	कृपणता
चञ्चरीक	-	भ्रमर
सोहल	-	शोभित भेल
छान	-	कलङ्क
अदक्षिण	-	प्रतिकूल
इन्दीवर	-	नील कमल
कीर	-	सूगा
अकानल	-	सुनल
पोषक-द्वेषक	-	पोसनिहार (कौआक) द्वेषी
श्मश्रु	-	दाढ़ी-मोछ
शैवाल-लतिका	-	सेमारक लत्ती
कुण्डलित	-	लपेटल

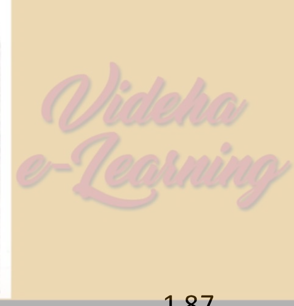
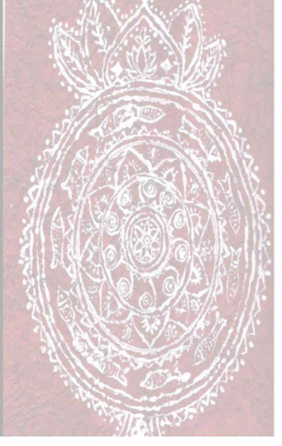


कर्णिकार	-	कनैल
ग्रीवा	-	गरदनि
इन्द्रायुध	-	वज्र
तमाल-साल	-	साँखु
शम्पा	-	विद्युल्लता
सहकार	-	आम
वकुलमुकुल	-	भालसरीक कली
पखान	-	पाथर
दमनक	-	दोनाफूल
अंसयुगल	-	दुहूस्कन्ध
अश्मसार	-	लोह
मणिबन्ध	-	पहुँचा
अबलासव	-	विरोध
दुहिण	-	ब्रह्मा
जम्भरिपु	-	इन्द्र
ऊरु	-	जाँघ
आरत	-	विरोध
नीरज	-	जलमे अनुत्पन्न, धुलि रहित, विरोध
इलातनय	-	पुरुरवा
सुरवैद्ययुगल	-	दुहू अश्विनीकुमार
क्षितिहरिहम	-	पृथ्वीन्द्र
परपुष्ट	-	कोयल, कोकिल, पसान्तरमे परिपुष्टा वैश्या
मधुप	-	भ्रमर, मद्यप
आतङ्करङ्क	-	निर्भय
काव्यक	-	शुकक
मधुभरि	-	बसन्तपर्यन्त
सुरभिमग	-	कामधेनुक मार्ग
अनीति	-	अतिवृष्ट्यादिरहित
शिक्षालोक	-	प्रकाश
तारस्रव	-	उच्चध्वनि
जनप्द	-	अपन देश
साभिनिवेश	-	आग्रहपूर्वक
धारणा-ध्याण	-	अष्टाङ्गयोगक छठम ओ सातम अङ्ग
प्रकृति	-	स्वभाव, प्रजा
पीयूष-यूष	-	अमृतसार
मार्तण्ड	-	सूर्य

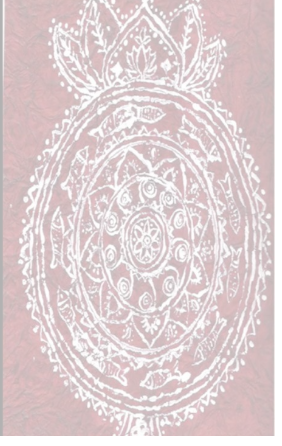




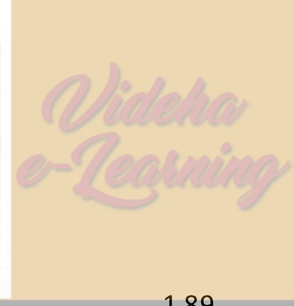
सत्वक	-	सत्वगुण
सौम्य	-	बुधग्रह
वाक्पति	-	बृहस्पति
रवि-कल्प	-	सूर्य-सदृश
याचना-परायण	-	याचक
अभियोगी	-	अभियोग कएनिहार
कैरवामोद	-	कुमुदक सौरभ, शत्रुक आनन्द
अनुदार	-	स्त्रीसँ अनुगत
पुत्रेष्टिक	-	पुत्रोत्पादक यज्ञ
एकावली	-	मोतीक माला
मत्सरिता	-	अन्यशुभद्वेष
लालनसुहिता	-	लालने तृप्त वा अनुकूल
परिणाह	-	वृद्धि
प्रमत्त	-	असावधान वा उन्मत्त
बालवशामे	-	नवीन हथिनी
आविल	-	पङ्किल
अर्धचन्द्र	-	चन्द्रक ओ गड़हत्था
शिखिकलाप	-	मयूरक पिच्छ, विषम
बलाहक	-	मेघ
सरणी	-	आकाश
जड़भाव	-	शैत्य वा जलत्व
मेचक	-	नील
द्विरद	-	हाथी
धम्मिल्ल	-	केशपाश
विलक्ष	-	लज्जित
पथिक-चक्र	-	चक्रबाक ओ समुदाय
काली	-	कारीरङ्ग
तारा	-	आँखिक पुतड़ी
काली	-	प्रथमा महाविद्या
तारा	-	द्वितीया
चतुश्रुति	-	श्रुतिवेद, पढ़निहार ब्रह्मा
श्रुति	-	कान, सुनब
विश्रुति	-	सिद्धि
छीजक	-	नष्ट होएबाक
कलकण्ठी	-	कोकिला
तप्त-तपनीय	-	सोना, स्वर्ण

चिवुक	-	दाढ़ी
परिस्फुर	-	चञ्चल
लेखा	-	गणना
जूझल	-	लड़ल
महायति	-	अतिविस्तीर्ण
आहित	-	स्थापित
स्तूप	-	माटिक ढेरी
लिकुचक	-	बड़हड़क
श्रीफल-मद	-	विल्वफलक गर्व
गर्त	-	खत्ता
कुलाल	-	कुम्हार
नाभिभव	-	ब्रह्मा
शारदा	-	अदृश्या सरस्वती नदी (अलखरूप शारदा)
त्रिदिवस सारिणी	-	गङ्गा
वली	-	उदररेखा (तीनिवली)
बली	-	बलवान
पाटच्चर	-	चोर
केहरि	-	सिंह
नितम्बक	-	पर्वतक मध्य भागक
विधिओजक	-	प्रतापक
कृष-नीच	-	नीचाँ दिसिसँ क्रमहि पातर (जङ्घा-क्रम-कृष-नीच)
वेत्र-दण्ड	-	सोनाक अधिकार दण्ड
हंसक	-	नुपूर
दश-शशधर	-	नखरूप-दशचन्द्रक
लाजें बीतल	-	संकुचित भेल
अनृत-दूषण-कृपाणी	-	मिथ्यादोषक छुरी जेकाँ नाशक
कथाऽवशेष	-	अवशिष्ट वक्तव्य
हर्ष-नृत्त	-	गात्रविक्षेप
सभीक	-	भीत
सागर-परिपन्थी	-	सागरक प्रतिस्पर्धा कएनिहार
सम्पुटित	-	सङ्कुचित
विगेय	-	निन्दनीय
विजीहीर्षा	-	विहारक इच्छा
दलतर	-	पातक नीचाँ
अतिसुकवि-ऊह	-	सुकवि तर्कक अगोचर
कुवलय-रम्भा-समान	-	पृथ्वी-मण्डलक रम्भा सदृश

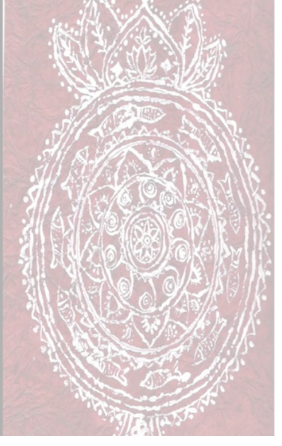
देवाङ्गनीय	-	देवाङ्गना-सम्बन्धी
रास	-	मण्डलाकार नृत्य
श्यामा	-	प्रियङ्गु
व्यामोहक	-	सम्मोहक
काल	-	यमराज
सारङ्ग	-	हरिण
कृतयुग	-	सत्ययुग
रण-एकतान	-	युद्धमे सर्वदा विजय पओनिहार
नृपति-पताकिनीक-		राजसेनाक
विकटप्रतीक	-	दारुणाकार
पुण्डरीक	-	बाघ
दिनेन्दु-दीन	-	दिनक चन्द्र सदृश मलिन
सर्वसहाक	-	पृथ्वीक
लीन	-	प्रलयमे प्राप्त
विलीन	-	विलाएल
गोए	-	राखि
तदनुसार	-	पाछाँ
विदग्धताक	-	रसिकताक
गरुअ	-	पैघ
भूरमाक	-	भूतल लक्ष्मीक
शर्म	-	सुख
दलितपांशु	-	निष्पाप वा निर्दोष
भवितव्यवश्य	-	भाग्याधीन
अन्नुरूप	-	प्रतिकूल
प्रणिधानलीन	-	ध्यानमग्न
द्विजदत्त	-	सिद्धब्राह्मणसँ देल
दत्त-प्रदत्त	-	दत्तत्रेयसँ देल
उदेष	-	अन्वेषण
स्वरति	-	स्वविषयक प्रेम
धैर्य-कदर्य	-	अधीर
चरमदशाक	-	मृत्युक
अवगाह	-	आलोड़न
ओज	-	तेज
यशस्य	-	यशोजनक
अलेश	-	निश्छल
विजिगीषा	-	विजयक इच्छा



पुटपाक	-	दुइ स्रबाक सम्पुटमे वस्तुकँ मूनि पक
हयग्रीव	-	राक्षस जेकरा विष्णु मारल
अनन्त	-	अन्त-रहित
व्यपाय	-	परिपूर्ण
भङ्ग	-	पराजय
सङ्गर	-	युद्ध
तनु	-	कोमल
आश्रित-दुर्ग	-	दुर्गोपासक
दुर्ग	-	दैत्यसँ सेवित दुर्गम
सर्वसहा	-	पृथ्वी, तितिक्षा, सभ सहनिहारि पृथ्वी
मनु	-	मन्त्र
शिव	-	कल्याणकारक
कूर्च	-	ह्रीँ
शिखिजाया	-	स्वाहा
आखर	-	ह्रीँ गौरि! रुद्रदयिते! योगेश्वरी। हूँ फट स्वाहा
अन्वर्थाख्य	-	यथार्थनामा
सिद्धि	-	सिद्धिकेँ प्राप्त, सम्पन्न
ब्राह्मण	-	भोज-पञ्चाङ्ग पुरश्चरण (तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोज नृसोम)
वैन्य	-	राजा पृथु
फलक	-	ढाल
शिशुमार	-	सौँस
धन-शाद	-	पाँक
क्षेपणी	-	करुआर
पटमण्डप	-	तम्बू
यादस्स्वन	-	जलजन्तुक शब्द
पूत	-	पवित्र
द्विरदकाँ	-	हाथीकेँ
दानजल	-	मदजल
मन-अवसाद	-	दुःख
भव्य	-	शुभ, सुन्दर
आयुधराजि	-	चञ्चला, विद्युत
चैत्य	-	प्रसिद्ध गृह
दुर्ग	-	किला
सुचतुष्पश	-	चौबट्टी
अहम्पूविका	-	हम पहिने, तँ ह्म पहिने, एहि स्पर्धासँ दौगब





1.90

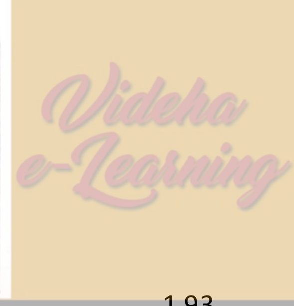
पवि	-	वज्र
अर्थ	-	प्रयोजन
प्रभूत	-	बहुत
लाघव	-	शीघ्रता
दनुज-तनुज	-	शरीरमे उत्पन्न
अर्भ	-	नेना
सुरसरणी	-	आकाश
शारिका	-	मएना
मेकल	-	नर्मदा नदीक उत्पादक पर्वत
परिपाटी	-	परम्परा
उत्कोच	-	घूस
वितान	-	विस्तार
प्रकोष्ठ	-	पहुँचा
अङ्गुरीय	-	अङ्गुठी
केतन	-	ध्वजा
निर्मम	-	ममताहीन
उदिखर	-	उदित
दीधिति	-	चन्द्रकिरण
दक्षिण	-	अनेकमे समानानुरागी ओ दहिन
मत्सरी	-	द्वेषी
विनिपातोन्मुख	-	अवनति दिस प्रवृत्त
मधु-सञ्ज्ञँ	-	नामसँ
नृपदारक	-	राजकन्या
प्रमोद-निबन्धन	-	कारण
वन्दी	-	कैदी
पुरुषार्थ चतुष्ट्य	-	धर्म, धन, काम ओ मोक्ष
दीधिति-माली	-	सूर्य
नरनाथ	-	परिकर
औरस-सुत	-	अपनासँ धर्मपत्नीमे उत्पन्न पुत्र
चक्रधर	-	नारायण
ईषत्कर	-	सुकर
कुलिशायुधसँ	-	इन्द्रसँ
प्रमा-सालित	-	यथार्थज्ञानसँ स्फीत
उक्ति-प्रगल्भ	-	बजबामे प्रौढ़
शमन	-	यमराज
विधेय	-	कर्तव्य

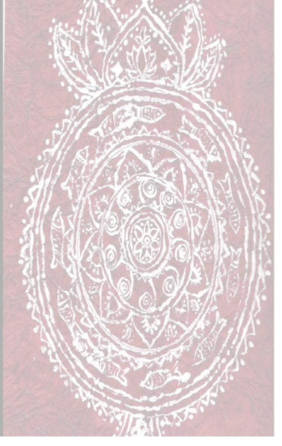





दुर्विपाक	-	अधलाह फल
सङ्कल्प-कल्पना	-	मानस कर्मक रचना
स्तम्भित	-	जड़ीभूत
सकल-करण-परिवारक-		इन्द्रिय वर्गक
भव-झरिणी	-	संसार नदी
शशिकान्त	-	चन्द्रकान्त मणि
रजनिकर	-	रुचिएँ- कान्तिएँ
निष्कपट	-	रुचिएँ-प्रीतिएँ
द्रुत	-	शीघ्र
विद्रुत	-	पघिलल
मानसिक	-	व्यतिक्रमहुक-मानस-व्यभिचारहुक
उन्मिषित	-	बढ़ल
प्रकृतिस्थ	-	चैतन्य-युक्त
कालासुर	-	कालकेतु राक्षस
अमान	-	अपरिमित
अमानव	-	अलौकिक
कुरङ्गित	-	हरिण जेकाँ कुदैत
विक्रम	-	विलक्षण वा विगत छै क्रम जाहिमे
पञ्चानन	-	सिंह
आरभटी	-	आडम्बरपूर्ण चेष्टा
दुरभिसन्धि	-	दुराशय
कान्दिशीक	-	भयसँ पढ़ैनिहार
अनाथ	-	विधवा
धृष्ट	-	प्रौढ़
निकृष्ट	-	नीच, छोट
उपरोधन	-	धैरव
अनारम्भ	-	आरम्भ नहि करब
भानुमान	-	सूर्य
कृकलाश	-	गिरगिट
सन्नाह	-	युद्धक उद्योग
मधु-मधुरिमाई	-	द्राक्षासदृश-मधुर सम मधुर, दाखस्न
सर्वज्ञम्मन्य	-	अपनाकेँ सर्वज्ञ माननिहार
वीरमानी	-	अपनाकेँ वीर माननिहार
नृशंस	-	क्रूर (वातक)
अपलापपरा	-	लाथ करबामे तत्पर
प्राथमिक	-	पहिले बेरुक

प्रकार	-	दिवारक
अज	-	बत्तू
कुरङ्ग	-	हरिण
गवय	-	गो सदृश नीलगाय
शार्दूल	-	बाघ
साम्हर	-	हरिणसन जन्तु
भूतनाथ	-	महादेव
प्रमथराजि	-	गणसमूह
शृङ्गी	-	शृङ्गवाला
जटी	-	जटाधारी
वारणरद	-	हाथीकसन दाँतबाला
पुच्छी	-	नाङ्गरि
कृत्तिपटी	-	बाघक चाम पहिरनिहार
चत्वर	-	चट्टान
भीरुभीमा	-	भीरुक भयङ्कर
पटल	-	पटि गेल
जन्य	-	युद्ध
राजन्य	-	क्षत्रिय
भिन्दिपाल	-	ढेलमासु सन गुल्ली फेंकबाक अस्त्र
तोमर	-	मन्थन दण्डसन अस्त्र
कृपाण	-	तरुआरि
परशु	-	फरुसा
असि धेनु	-	खाँड़, छूड़ा
भुशुण्डी	-	अग्निप्रधान अस्त्र
परिध	-	हथौड़ी
दनुजभुवन	-	पाताल
जलद-छाया	-	मेघक छाहरि, तत्सदृश अस्थिर
मृत्युशक्ति-उत्क्रान्तिदा-		मृत्युकँ 'उत्क्रान्तिदा' नामक शक्ति छन्हि जाहिसँ जीवोत्क्रमण करैत छथि
वृन्दारक-वृन्दक	-	देवसमूहक
निजचमू	-	सेना
पताल	-	अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल
सन्देश	-	संवाद (समाद)
त्रिदिवहुँ	-	स्वर्गहुँ
प्रत्यूष	-	प्रातः काल



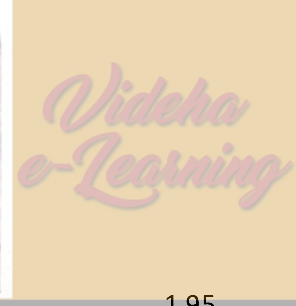
दानव-भोगिनी	-	राजाक सामान्य स्त्री
अभ्यास	-	योगाभ्यास
क्लेश	-	अविद्या-स्मिता-राग-द्वेष ओ अभिनिवेश
जनि	-	जन्म
भोगभू	-	भोगस्थान वा भूमि
भुजगभुवन	-	पाताल
नाक	-	स्वर्ग
सहस्त्रार	-	शिर स्थित सहस्त्रदल- कमलाकार चक्र
निर्मन्तु	-	निरपराध (निर्दोष)
फेरि	-	घुमाए
फेरि	-	पुनि
अन्तराय	-	विघ्न
याचकपटलीकल्प-		याचकसमूहजेकाँ
रहस्योद्भेदसँ	-	गुप्तप्रीतिक प्रकाशसँ
लोकपति	-	नरेश
मध्यमलोक	-	मर्त्यभुवन
अधोभुवन	-	पाताल
नररिक्त	-	मनुष्यसँ रहित
तूर्ण	-	शीघ्र
उद्देश	-	उच्चारण
उपेन्द्र	-	वामन भगवान्
कन्याक	-	शुक्रक पुत्री देवयानीक
अर्थना	-	याचना
सपरिकर	-	परिवार परिजन सहित
पुरुषसूक्त	-	“ओँ सहस्त्रशीर्षा” इत्यादि सोड़ह ऋचा
दुइ	-	नारायण ओ तुर्वसु (निज दुइ बापक परिचय)
प्रतिग्रह	-	दान लेब
लाजहोम	-	लज्जाक हवन
लाजहोममे	-	लावासँ हवनमे
प्रणयकोपक	-	मानक
अपसारण-गति	-	हटएबाक उपाय
परमाणु	-	सूर्यक प्रभामे दृश्य रेणुक छठम भाग
द्वयणुक	-	दू परमाणु
पूगीफल	-	सुपारी
व्यङ्ग्यवचन	-	व्यङ्ग्यार्थ-बोधक वचन
दिवसचतुष्टय	-	चारि






गानचातुरी-विवरण	-	प्रकाशन
कान-सुधारस-वितरण	-	दान
चारिमशुचि	-	चारुतासँ भूषित
पाँकल	-	पाँकमे लागल
निमीलित	-	सङ्कुचित
कीलित	-	बद्ध (पीड़ित)
मदन-रुजा	-	रोग
निर्वाप	-	शान्ति करब
समाजित	-	पूजित
उद्भेद	-	विकास
चलदल	-	पीपड़
मन्मथ-घर्षण	-	प्रगल्भता
कल्पकल्प	-	कल्पसदृश
आशा	-	दिशा
विदग्ध	-	विकल, रसिक
सुरतवितान	-	क्रीड़ा-कलाप
वितानल	-	विस्तीर्ण कएल
संभोग	-	शृंगारक पूर्वाङ्ग वा केलि
विप्रलम्भ	-	शृङ्गारक उत्तराङ्ग वा विरह
अवसित	-	समाप्त
विधुर	-	विरहित (दीपक-विधु-विधुर)
अनवम	-	निर्दोष
विरस	-	निःस्पृह (विमुख)
पञ्चयज्ञ	-	ब्रह्मयज्ञ (वेद अध्ययन-अध्यापन), पितृयज्ञ (पितरक तर्पण ओ नित्यश्राद्ध), देवयज्ञ (हवन), भूतयज्ञ (वैश्वदेववलि), नृपज्ञ (अतिथि-सत्कार)
पर्व	-	पाबनि
आन्तरिक	-	अन्तःकरण
मञ्जूषा	-	पेटी
भूमिनेता	-	पृथ्वीपति
जरती	-	बृद्धा
वैजयन्त	-	इन्द्राणीसँ भूषित इन्द्रप्रासादक
पति-परिचार	-	स्वामीक सेवा
मन्त्र	-	विचार
कान्त	-	प्रिय
श्लाधापरायण	-	प्रशंसामे तत्पर







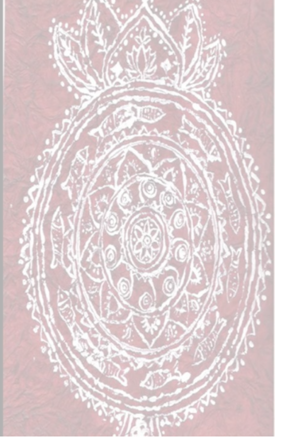
Gajendra Thakur

धव	-	धावा
मधुपा	-	मद्यपायिनी
भूरि	-	बहुत
सर्वसहासमेत	-	सभ (दुःखकेँ) सहनिहारि पृथ्वी सहित
कासर	-	महिसा
हिण्डोर	-	मचकी
शैलूष-कुहना	-	नटक माया

संगमे हरिमोहन झा, यात्री, धूमकेतु, साकेतानन्द, रामभद्र, धीरेन्द्र, कापड़ि, मलंगिया, नचिकेता, कुलानन्द मिश्र, राजकमल, राजमोहन झा, सुभाषचन्द्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, रमानन्द झा ‘‘रमण’’, मोहन भारद्वाज, रमानाथ झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, लिली रे, इलारानी सिंह, रामलोचन ठाकुरकेँ पढ़ी, आ दीनबन्धु झाक धातुरूप आ रमानाथ झाक मिथिलाभाषा प्रकाश, आ भारत आ नेपालक कक्षा नौ-दस केर पोथी सेहो घोँटि जाइ आ तखन जे अहाँ मिथिलाक्षर सेहो नीक जेकाँ पढ़ी आ लिखि सकी तँ अपनाकेँ मैथिली साहित्य परम्परासँ जोड़ि सकब आ मेडिओक्रिटी सँ बाहर आबि सकब। मैथिली पत्र-पत्रिका सभ सेहो पढ़ी आ अनुवाद साहित्य सेहो। संगहि विदेह-मिथिला-तीरभुक्ति-तिरहुतक इतिहास आ महान पुरुष आ महिला लोकनिक कृति आ चरित्रक अध्ययन सेहो आवश्यक। एतेक सबक पूर्ण भेलाक बाद जे साहित्य अहाँक लेखनीसँ निकलत तकर स्वाद फराक रहत ।







कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)

माँछ वंशीसँ सेहो मारल जाइत अछि।

छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि।

भिरखा- हाथसँ उठा कए फेंकल जाइत अछि। एहिमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि। अन्ता जाल छोट होइत अछि आ कछारमे रातिमे लगाओल जाइत अछि।

कोठी जाल पैघ होइत अछि आ एहिमे बाँसक प्रयोग होइत अछि।

बिसारी जाल- दिनमे माँछ हरकि जएतैक से रातिमे खुट्टी लगा कऽ रातिमे माँछ मारल जाइत छै।

चट्टी जाल- प्लास्टिकक, पैघ-छोट दुनू, दिनमे प्रयुक्त, आषाढ़-साओन दुनू मे। ५-१० मिनटमे उठाओल जाइत छै।

सूतक मोट पैराशूट जाल, सूत आ नाइलनक मिश्रणक करेन्ट जाल, सूतक बड़का हाटा जाल होइत छै।

पैराशूटसँ छोटकी माँछ उड़ि जएतैक।

पैघ मछली बड़का वंशीसँ, बड़का चट्टी जालसँ, सूताक महाजालसँ मारल जाइत अछि।

पैघ छोट दुनू माँछ बाँसक जंघासँ मारल जाइत छै। एकरा ४ हाथ खड़ा नारियल आ नाइलोनक डोरीसँ बान्हल जाइत छै।

बाँसक करचीक छीपसँ सेहो माँछ मारल जाइत छै।

पटुआक सप्ठीक १००-२०० पुल्ली एक संग लगा कए सेहो माँछ मारल जाइत छै।

हाटा जाल किलोमीटर धरि पैघ होइत अछि आ सूताक बनैत अछि।

चाँच कहड़ा बाँसक होइत अछि।धार/ बदहाल घेरकँ मारल जाइत अछि। पानिकँ फुला कए डगरी लगाओल जाइत छै, चाँच फहड़ासँ घेरल जाइत अछि।

माँछक प्रकार

डाँरा मछली (डेरका मछ्ली), मूँहा मछली, पोठी, लत्ता (पिआ माँछ), गड़इ, पलवा, टेंगड़ा, सिंघी, माँगुड़, चपड़ा, पैना, रेवा, गड़ही, उरन्था, मोहुल, बुआरी, बामी, बगहार, चेलवा, कौअल, गोर्रा, सौल, भौरा, कजाल, कलबौस, चित्तल, भोइ, कत्ती, भौकुडी, सिलोन, रेहू, मिरका, बिलासकप, सिल्वरकप, चाइना माँगुर, कबइ, चाइना कबइ।

दरबा- छोट, पातर- २-३ इन्चक, पीठपर कारी, बगल सफेद






गड़ई- कारी
चोपड़ा- चाकर, कारी, मलिन
पलबा- दुनू दिस काँट, पीठपर सेहो काँट, रंग- पीयर-उज्जर, मोंछ सेहो होइत छै।
टेंगड़ा- पैघ माँछ, एकरो तीन टा काँट, मुँहपर मोँछ।
सिंघी- पातर, दू टा काँट दुनू दिस, लाल रंगक आ लाल आ हल्का कारी
मँगुरी- मोट आ मह्ग सेहो।एकरो दू टा काँट, लाल आ हल्का कारी
पैना- सफेद रंगक, पीठपर काँट
रेवा- सफेद, पौआ-आधा किलोक
डढ़ी- पीठपर काँटा, सफेद
उरन्था- पीठपर काँट, नीचाँ गामे झुकल, सफेद
भालु- लम्बाइ मुँह, सफेद- खड़ा(पीयर), ऊपरमे काँटा, नाभिक लग काँट (सभ माँछमे)
बोआली- पैघ मुँह- २० किलो धरि, सफेद, पीठपर काँट, पखना दुनू दिस (सभ माँछमे)
बामी- लम्बा, बिलमे रहैत अछि, मुँह आगू, गोल मुँह, सूआ जकाँ लम्बा, पीठपर काँट, नाभिपर दू टा काँट
बघार- छोट, १ पौआसँ क्विंटल भरिक, कारी-खैरा (पीयर), काँट- पीठपर एकटा, बगलमे दू टा, पुच्छी-चाकर, मुँह चापट, चकड़ाई- बेसी।
चेलबा- उज्जर, काँट नहि होइत छै। चलैक लेल दुनू दिस पखना, माँछमे तेजगर।
कौअल- सफेद, मुँह नमगर।
गोर्रा- मोँछ, दाढ़ी, काँटा, आगाँमे टेढ़
साउल- लाल आ पीयर, नमगर, २-३-५ किलोक
भौरा-(गजाल), साउल, चितफुटरा, पैघ २०-२५-४० किलो तक, गोल-गोल उज्जर, हरियर आ कारी
कलबौस- रंग हल्का कारी
अंदाजी माँछ
चित्तल- चकरगर बेसी, २०-२५ किलोक, २-३ फीट चकरगर
सिलोन- पालतू,३-४ किलोक,पोखरिमे पोसल जाइत अछि।
रोहु-पीयर, हल्का उज्जर, पीठपर काँट
मिरका- हल्का लाल सफेद
सिल्वरकप- पालतू
चैना माँगुर- चलानी (पालतू), दुनू दिस काँट
चैना कबइ- पालतू (चलानी), पीठपर जहाँ-तहाँ काँट
कबई- कनफर आ पीठ दुनू ठाम काँट






चेंगा माँछ- सुखायलोमे दूर धरि चलि जाइत अछि, कबई जकाँ ।

आब किछु दोसर जलजीव:-

सौंस- पानिमे माँछ खाइत अछि, आदमीकेँ नोकसान नहि, आदमी संगे खेलाइत अछि, सीटीक अवाज (डोलफिन)

घड़ियाल- कुर्सेला लग गंगामे, मुँह लम्बा, एक-डेढ़ हाथ,दाँत- आँगुर जेकाँ, रंग लाल, पुछरी नमगर, ३ हाथ

बोँछ- आदमीक रंग रूप, कारी, माथपर चूल- केश पकड़िकेँ डुमा दैत छै

आ कृषि शब्दावली:--

जोड़ा बैल/ हर

ईश- हरमे जोड़ि कऽ पालोमे बान्हल जाइत छै।

लगना

पालो- कन्हापर

पालोमे दू टा कनैल दुनू बगल बड़दकेँ एम्हे- उने (एम्हर-ओम्हर) नञि होमए दैत छै।

कनैलसँ हटि कऽ एक सवा फीटक डोरी बान्हल जाइत छै। सम्मैल (पौन फीटक लकड़ीक/ बाँसक) मे डोरी बान्हल जाइत छै।

ईशक नीचाँमे पेटार ईशकेँ खुजए नहि दैत छै, ऊँच-नीच करए दैत छै।

हलमे पुट्ठी, नीचाँमे दू-फीटक अगल फल्ली पुट्ठीमे सेट कएल जाइत छै, माटि उखाड़ैत छै।

परहत (लगना)- हरवाह एहिपर हाथ धरैत अछि। तीन फीटक/ ६ इन्चक मुट्ठी पकड़ैबला लगनामे ठोकल जाइत छै (मुठिया)।

नाधा- पालो-ईशमे बान्हिकेँ जोड़ल जाइत छै, डोरी होइत छै ४-५ फीटक।

दू टा मैडोर (डोरी)- १०-११ फीटक दू टा- एकरा चौकीमे बान्हि कऽ बड़दमे बान्हि कऽ हरवाहा चौकी दैत अछि।

चौकी- (बाँस/ लकड़ीक) ६-७ फीटक - एहिपर हरवाह चढ़ि कऽ चौकी दैत अछि। हरवाहाक हाथमे एक टा झूर/ ज्वोली/ लाठी बड़द हाँकए लेल रहैत अछि।

गेहूँक जोताई ३ इन्च गहरा कऽ ४-५ टा चास दऽ होइत अछि।

मक्काइ लेल ४-५ इन्च गहराइ करए पड़ैत अछि।

बीया- एक एकड़ (१०० डिस्मिल) मे २ मन गहूमक बीया, १० किलो मक्काइक बीया।

खाद- एकड़मे २० कि. डी.ए.पी., ५ किलो पोटाश, ५ किलो यूरिया, ५ किलो जिंक गहूम बाउग करबा काल देल जाइत अछि।






मकइमे डेढ़ सँ दू फीटक भेलाक बाद माटि चढ़ाओल जाइत अछि। २ कतार २ फीट चौड़ाइसँ। एकड़मे २ क्विंटल खाद देल जाइत अछि। १०० किलो डी.ए.पी., ५० किलो यूरिया, २० किलो साल्फिक, १२० किलो पोटाश, १० किलो जिंक। पानि पटवन समयमे खाद दऽ कऽ माटि चढ़बैत छियैक, फेर पानि पटबैत छियैक। पानि पटेलाक बाद यूरिया एक एकड़मे एक क्विंटल देल जाइत अछि।

आब तर-तरकारीक प्रकार :-

सिंघिया करैला- बड़ा- हाइ ब्रेक/ प्लेन
छोटकी करैला- हजरिया/ जुल्मी
सफेद करैला- पटनिआ (नजली- मध्यम खुटक)

तारबूज-

नामधारी-स्वादिष्ट- भीतरमे लाल, ऊपरमे सफेदी/ चितफुटरा (हरियर-उज्जर)
माइको- हल्का कारी
पहुजा- माइकोसँ बेशी कारी
राजधानी- कारी रंगमे
महाराजा- पैघ छोट कारी रंगमे
सैनी आ सुगरदीबी- कारी रंगक
नाथ- हल्का चितफुटरा (उज्जर/ हरियर)
गंगासागर- कुम्हर जेकाँ उज्जर साफ
सोरैय्या- चितफुटरा

खीरा

जुल्मी- छोट
हाइब्रीड
माइको- नमगर/ हरियर/ पीअर
महाराजा- खीरा
खेतीबारी- हरियर रंगक, नमगर कम, पाछाँमे मोट बेशी आगाँ कम।



Videha e-Learning

Gajendra Thakur

